काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 91वें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर माननीय कुलपति प्रो0 डी पी सिंह का स्वागत भाषण 13 मार्च 2009

महामहिम राष्ट्रपति जी, माननीय कुलाधिपति जी, माननीय विशिष्ट अतिथि डॉ0 देवीसिंह शेखावत जी, कुलसचिव जी, विद्वत परिषद एवं कार्यकारिणी के माननीय सदस्यगण, माननीय अतिथिगण, अधिकारीगण, विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्य, उपाधि ग्रहण करने वाले समस्त विद्यार्थी, पत्रकार बंधुओं, देवियों और सज्जनों।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के इक्यानवें दीक्षान्त समारोह में स्वागत उद्‌बोधन देते हुए मुझे अपार गौरव की अनुभूति हो रही है इस शिक्षापीठ की जिस आसंदी को महामना पं0 मदनमोहन मालवीय जी ने स्वयं सुशोभित किया। जिस आसंदी को सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने गौरवान्वित किया। उस प्रतिष्ठित कर्तव्य–पालन की आसंदी पर रहकर आज मुझे महामहिम राष्ट्रपति महोदया, अपने कुलाधिपति महोदय तथा विशिष्ट अतिथि महोदय का स्वागत करते हुए सर्वाधिक गौरव का अनुभव हो रहा है।

इस दीक्षान्त समारोह के पुनीत अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति महोदया की प्रेरक उपस्थित से इस विश्वविद्यालय के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया है। आपको अपने बीच पाकर हम कृतकृत्य हैं। आपके दीक्षान्त उद्‌बोधन से आज हम सभी ज्योर्तिमय होंगे।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, विद्वता की प्रतिमूर्ति माननीय डॉ0 कर्ण सिंह जी का मार्गदर्शन एवं संरक्षण हमें मिल रहा है जिसके आलोक में हमारे प्रगति पथ का प्रदीप प्रज्जवलित हो रहा है।

आज के इस स्मरणीय अवसर पर आदरणीय डॉ0 देवीसिह शेखावत जी की गरिमामयी उपस्थिति हमारे लिए उत्साहवर्धक है। माननीय डॉ0 शेखावत लब्ध–प्रतिष्ठित शिक्षाविद् हैं तथा अनेक शिक्षण संस्थाओं के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

मैं अपने विश्वविद्यालय के तीन संस्थानों के निदेशकों, महाविद्यालयों के प्राचार्यों, पन्द्रह संकायों के संकाय प्रमुखों, एक सौ चालीस विभागों के विभागाध्यक्षों, पन्द्रह सौ शिक्षकों सात हजार अधिकारी–कर्मचारियों तथा पच्चीस हजार विद्यार्थियों की ओर से आपका वंदन करता हूँ। समस्त काशीवासियों की ओर से भी मैं आपका अभिनंदन करता हूँ।

मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी परिषद तथा विद्वत परिषद के माननीय सदस्यों,

नगर– महापौर जी, सम्माननीय अतिथियों, विभिन्न विश्वविद्यालयों के उपस्थित माननीय कुलपतियों एवं भूतपूर्व कुलपतियों, समस्त आचार्यगण, मीडिया जगत के प्रतिनिधिगण एवं नगर के गणमान्य नागरिकों, देवियों और सज्जनों का भी स्वागत करता हूँ। आज के दीक्षान्त समारोह में जिन विद्यार्थियों को उपाधियॉ एवं पदक प्रदान किये जाने हैं मैं उनका भी अभिनन्दन करता हूँ।

महामहिम जी! महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी के पुण्य से फलित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की प्रगति का इतिहास अत्यंत गौरवशाली है। समय का वातायन एवं इतिहास के पृष्ठ गवाह हैं कि इस देश के लोकतंत्र को सुदृढ़ एवं समृद्ध करने में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। महामना इस विश्वविद्यालय में प्राचीन ज्ञान एवं आधुनिक विज्ञान का समवेत समन्वय चाहते थे जो राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया से विद्यार्थियों को जोड़कर उन्हें आदर्श नागरिक बना सके।

दीक्षांत समारोह के पुनीत अवसर पर महामहिम जी हम आपको विनम्रता पूर्वक अवगत कराना चाहते हैं कि महामना के इस शिक्षामंदिर की समग्रता, श्रेष्ठता और पवित्रता हेतु हम आज भी प्रयासरत हैं। संस्कारों की शिक्षा के प्रति हम आज भी सजग हैं। मानव मूल्यों के बीजारोपण की प्रक्रिया आज भी यहाँ जारी है।

हम महामना के सपनों के अनुरूप इस विश्वविद्यालय को आगे ले जाने हेतु कृत संकल्पित हैं। हमारी सद्इच्छा है कि महामना के इस परिसर में हमारे विद्यार्थी देशभक्ति के गीत गुनगुनाएं। हमारा प्रयास है कि यह विश्वविद्यालय राष्ट्र निर्माण की सतत् पाठशाला बनी रहे। हमारा संकल्प है कि सर्वविद्या की इस राजधानी में सत्य, सदाचरण, शांति, अहिंसा और प्रेम जैसे शाश्वत मूल्यों का प्रतिष्ठापन होता रहे। हमारी कोशिश है कि महामना की इस बगिया में दया, करूणा, सद्भाव, सौहार्द और भाईचारे के फूल खिलते रहें। महामहिम! हमारा यह भी प्रयास है कि शान्ति और पर्यावरण के क्षेत्र में यह विश्वविद्यालय संपूर्ण विश्व में मार्गदर्शी संस्था की भूमिका निभाए। महामना की दृष्टि के अनुरूप ज्ञान–विज्ञान और आध्यात्म के समन्वय पर आज भी हमारा ध्यान केन्द्रित है।

अंत में एक बार पुनः मैं आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ। आपसे प्रार्थना है कि आप अपना आशीर्वाद हमारे विश्वविद्यालय पर बनाए रखें जिससे कि ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हम और हमारे विद्यार्थी सुदक्ष होकर महामना के संकल्पों के अनुरूप नये भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

जय हिन्द।